चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Times of India	18.8.22	3	4-5

HAU develops new mustard varieties

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: Scientists of the Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (CCSHAU), Hisar, have developed two improved varieties of mustard seeds. Besides Haryana, these varieties will also benefit the farmers of Punjab, Delhi, north Rajasthan and Jammu.

University vice-chancellor professor B R Kamboj said their oilseeds scientists have developed RH 1424 and RH 1706 varieties of mustard. In the meeting of the All-India Coordinated Research Project (mustard) organised at Rajasthan Agricultural Research Institute, Durgapur, Rajasthan, these mustard varieties have been identified for cultivation.

The vice-chancellor said that RH 1424 has been identified for cultivation under timely sown and rain-fed conditions, whereas RH1706 is a value-added variety with enhanced oil quality (less than 2.0% erucic acid content) and is recommended for timely sown and irrigated areas of these states.

Enumerating characteristics of these varieties, university director of research Dr Jeet Ram Sharma said that mustard variety RH 1424 had average seed yield of 26.0 q/ha with 14% increase over the popular variety RH 725 in rain-fed trials.

It matures in 139 days and has 40.5% oil content in its seeds. Likewise, mustard variety RH 1706 has improved the quality of oil with less than 2% erucic acid which will benefit the health of consumers.

The variety's average seed yield is 27.0 q/ha. It takes 140 days to mature and possesses 38.0% oil in its seeds, he said.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	19.8.22	9	2-5

घास से पैदावार में 40% तक आ सकती है कमी

- हकृवि के वैज्ञानिक किसानों को गाजर घास के नुकसान के प्रति कर रहे जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। गाजर घास जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर पैंफलेट का विमोचन करते हुए मुख्यातिथि डॉ. एस.के. पाहुजा फोटो : हरिभूमि

गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एग्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को सामूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया।

यह रहे उपस्थित

इस अवसर पर सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. ए. के. ढाका, डॉ. परवीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. आर.एस. दादरवाल, विद्यार्थी व कर्मचारी भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हरियाणा के विभिन्न हिस्सों में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों को गाजर घास के नुकसान के बारे में अवगत करवाया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	19.8.22	4	7-8

गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत हो सकती है कमी

जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ पर पंफलेट का विमोचन करते डा. एसके पाहुजा। • पीआरओ

जागरण संवाददाता, हिसार : गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. एसके ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एग्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को सामूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया। इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डा. टोडरमल पुनियां ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। इस अवसर पर सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डा. एके ढाका, डा. परवीन कुमार, डा. सतपाल, डा. कविता, डा. कौटिल्य, डा. सुशील, डा. निधि काम्बोज, डा. आर.एस. दादरवाल व अन्य मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19.8.22	3	1

गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक हो सकती है कमी

हिसार, 18 अगस्त (ब्यूरो): गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है, बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया, जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने शुभारंभ किया।

उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एग्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	18.8.2022	--	--

चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

- हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभः कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

प्रवीन कुमार

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुगार्पुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई हैं। उन्होंने कहा ये किस्में उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होंगी। कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। यह इस विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण संभव हुआ है।

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएं : अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरूसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

अब तक सरसों की विकसित की हैं 21 उन्नत किस्में : विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवंशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक वहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम : सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अवतार, आर.के. श्योराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोयल, दलीप कुमार, श्वेता, कीर्ति पद्म, महावीर और राजबीर सिंह शामिल हैं। कुलपति ने वैज्ञानिकों की इस टीम को बधाई दी और उन्हें भविष्य में भी सरसों की उम्दा किस्मों के विकास का कार्य जारी रखने को कहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	18.8.2022	--	--

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

आज समाज नेटवर्क

■ हरियाणा के साथ-साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ

चंडीगढ़। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के प्रवक्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं।

इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई हैं।

उन्होंने बताया कि आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुवाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है।

उन्होंने कहा कि ये किस्में उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने बताया कि हरियाणा कई

वर्षों से सरसों की फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है।

यह इस विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण संभव हुआ है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक वहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है।

हाल ही में यहां विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	19.8.22	9	1-4

हकृवि के वैज्ञानिक किसानों को गाजर घास के नुकसान प्रति कर रहे जागरूक

गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक हो सकती है कमी

हिसार, 18 अगस्त (विरेंद्र वर्मा) : गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है।

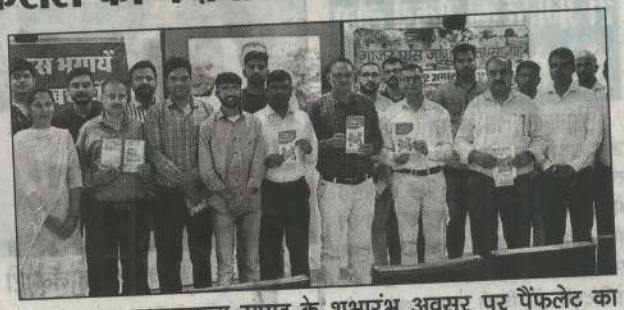

गाजर घास जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर पैंफलेट का विमोचन करते हुए मुख्यातिथि डॉ. एस.के. पाहुजा।

कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एग्ज़िमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह शाक एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जानें की सम्भावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया।

इस अवसर पर सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. ए. के. ढाका, डॉ. परवीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. आर.एस. दादरवाल, विद्यार्थी व कर्मचारी भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हरियाणा के विभिन्न हिस्सों में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों को गाजर घास के नुकसान के बारे में अवगत करवाया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिसार	19.8.2022	--	--

हकृवि के वैज्ञानिक किसानों को गाजर घास के नुकसान के प्रति कर रहे जागरूक

हिसार : गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती

है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एग्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955

गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक हो सकती है कमी

में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह शाक एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जानें की सम्भावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	18.8.2022	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को किया जागरूक

आज समाज नेटवर्क

गाजर घास जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर पैंफलेट का विमोचन करते हुए मुख्यातिथि डॉ. एसके पाहुजा। आज समाज

हिसार। गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठता डॉ. एसके पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एग्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
बढ़ते कदम	18.8.2022	--	--

गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक हो सकती कमीः पाहुजा

- एचएयू वैज्ञानिक किसानों को गाजर घास के नुकसान के प्रति कर रहे जागरूक

■ (हि.स.)।

गाजर घास जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर पैंफलेट का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. एसके पाहुजा।

हिसार। गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने शुभारंभ किया।

उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एग्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को सामूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया।

अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडरमल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह शाक एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आसपास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है जिसके कारण अनेक महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की संभावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया।

इस अवसर पर सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. एके ढाका, डॉ. परवीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. निधि कम्बोज, डॉ. आरएस दादरवाल, विद्यार्थी व कर्मचारी भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हरियाणा के विभिन्न हिस्सों में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों को गाजर घास के नुकसान के बारे में अवगत करवाया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	18.8.2022	--	--

वैज्ञानिक किसानों को गाजर घास के प्रति कर रहे जागरूक

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। गाजर घास न केवल फसलों के लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर घास से फसल

पैफलेट का विमोचन करते हुए मुख्यातिथि डॉ. एस.के. पाहुजा।

की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एग्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती है।

इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडर मल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है।

इस अवसर पर डॉ. ए. के. ढाका, डॉ. परवीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. आर.एस. दादरवाल भी मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	18.8.2022	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों को गाजर घास के नुकसान के प्रति कर रहे जागरूक

हिसार (समस्त हरियाणा न्यूज)। गाजर घास न केवल फसलों के

लिए हानिकारक है बल्कि यह शाक इंसानों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र में गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया जिसका कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा गाजर घास से फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। इसलिए समय रहते समन्वित प्रबंधन से इस खरपतवार पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन सस्य विज्ञान विभाग द्वारा जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से किया जा रहा है। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने अपने संबोधन में कहा कि इस घातक शाक के संपर्क में आने से मनुष्यों में एग्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां हो जाती हैं। उन्होंने इस शाक को समूहिक रूप से मिलकर जड़ से मिटाने का आह्वान किया। इस अवसर पर अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक, डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। इस अवसर पर सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. ए. के. ढाका, डॉ. परवीन कुमार, डॉ. सतपाल, डॉ. कविता, डॉ. कौटिल्य, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. आर.एस. दादरवाल, विद्यार्थी व कर्मचारी भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हरियाणा के कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों को गाजर घास के नुकसान के बारे में अवगत करवाया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	19.9.22	2	7-8

RESULTS OF ENTRANCE EXAMS DECLARED

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University has declared the results of the entrance examinations that were conducted for admission to the undergraduate, postgraduate, PhD courses, BSc Agriculture (four years) and (six years) courses. Controller of Examinations of the university Dr Pawan Kumar said candidates could see the results on the university's website admissions.hau.ac.in and hau.ac.in.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दै. भूमि	19.8.22	9	1-5

हकृवि में घोषित स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी में दाखिले के लिए परिणाम

बीएससी (आनर्ज) की प्रवेश परीक्षा में काजल प्रथम

■ बिश्नोई के इस्तीफा के बाद प्रशासन ने की उपचुनाव तैयारियां शुरू

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद बृहस्पतिवार को शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं। बीएससी (आनर्ज) कम्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवकीरत कौर द्वितीय और पूर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं जबकि बीएफएससी में नीरज सिंह ने पहला, प्रिया ने दूसरा और बुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशन, पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैन्सी तृतीय रही हैं। एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व गुनीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं। एमएसएसी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दूसरे स्थान पर रही। एमएसएसी मौलिक विज्ञान में शशांक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पायी पीएचडी (सभी विषय) में अर्चना कुमावत पहले स्थान पर रही है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एस.के. महता ने बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनर्ज) कम्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीबिजनेस मैनेजमैंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्सय विज्ञान व बायोटैकनॉलोजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे। परीक्षा नियंत्रक के अनुसार उम्मीदवार सभी परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देख सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	19.8.22	5	6-8

हकृवि ने घोषित किए सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी में दाखिले हेतु आयोजित प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम

हिसार, 18 अगस्त (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छः वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद आज गुरूवार को शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने यह जानकारी देते हुए बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनर्ज) कम्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीबिजनेस मैनेजमैंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छः वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्सय विज्ञान व बायोटैकनॉलोजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छः वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे।

डॉ. पवन कुमार के अनुसार उम्मीदवार उपरोक्त सभी परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देख सकते हैं। डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएससी (आनर्ज) कम्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवकीरत कौर द्वितीय और पुर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं, जबकि बीएफएससी में नीरज सिंह ने पहला, प्रिया ने दूसरा और बुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशन, पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैन्सी तृतीय रही हैं। एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व गुनीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं। इनके अतिरिक्त एमएफएससी में विशाल सोनी ने पहला, विशाल ने दूसरा व जय बंसल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एमएसएसी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दूसरे स्थान पर रही हैं। एमएसएसी मौलिक विज्ञान में शशांक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है जबकि पीएचडी (सभी विषय) में अर्चना कुमावत पहले स्थान पर रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19.8.22	4	6-8

बीएससी कम्यूनिटी साइंस में काजल एमएससी एग्री. में गुलशन ने बाजी मारी

एचएयू के स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी की प्रवेश परीक्षाओं के नतीजे घोषित

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद गुरुवार को शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए गए।

विवि के परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटेक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी कम्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्स्य विज्ञान व बायोटेक्नॉलोजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे।

डॉ. पवन कुमार के अनुसार, उम्मीदवार उपरोक्त सभी परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट admissions.hau.ac.in व hau.ac.in पर देख सकते हैं। डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएससी (ऑनर्स) कम्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवकीरत कौर द्वितीय और पूर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं। बीएफएससी में नीरज सिंह ने पहला, प्रिया ने दूसरा और बुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशन, पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैन्सी तृतीय रही हैं। एमटेक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व गुनीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं। इनके अतिरिक्त एमएफएससी में विशाल सोनी ने पहला, विशाल ने दूसरा व जय बंसल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एमएससी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दूसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी मौलिक विज्ञान में शशांक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है जबकि पीएचडी (सभी विषय) में अर्चना कुमावत पहले स्थान पर रही हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	19.8.22	4	6

एचएयू : पीएचडी प्रवेश परीक्षा में अर्चना प्रथम

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षाओं का परिणाम वीरवार को घोषित कर दिया। पीएचडी (सभी विषय) में अर्चना कुमावत प्रथम रही।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एसके महता ने बताया कि सभी परिणाम विश्वविद्यालय की वेबसाइट admissions.hau.ac.in, hau.ac.in पर उपलब्ध कराए गए हैं। परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएससी (ऑनर्स) कम्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवकीरत कौर द्वितीय और पूर्णिमा तीसरे स्थान पर रही है। बीएफएससी में नीरज सिंह प्रथम, प्रिया द्वितीय और बुलबुल तृतीय, एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशन पहले, पूजा दूसरे और कनिका तीसरे स्थान पर रही। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैंसी तृतीय, एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव पहले, गुनीत दूसरे, एमएफएससी में विशाल सोनी पहले, विशाल दूसरे व जय बंसल तीसरे स्थान, एमएसएसी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा द्वितीय, एमएसएसी मौलिक विज्ञान में शशांक प्रथम, अनुजा द्वितीय स्थान पर रही। संवाद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19.8.22	3	5,6

हकृवि ने घोषित किए सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. में दाखिले के प्रवेश परीक्षा परिणाम

हिसार, 18 अगस्त (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बी.एससी. एग्रीकल्चर 4 व 6 वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एस.के. महता ने बताया कि विभिन्न कोर्सों के लिए 2 चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं।

परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बी.एससी. (आनर्ज) कम्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवकीरत कौर द्वितीय और पूर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं जबकि बी.एफ.एस.सी. में नीरज सिंह ने पहला, प्रिया ने दूसरा और बुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एम.एस.सी. एग्रीकल्चर में गुलशन, पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एम.एससी. गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैन्सी तृतीय रही हैं। एम.टैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व गुनीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं।

इनके अतिरिक्त एम.एफ.एस.सी. में विशाल सोनी ने पहला, विशाल ने दूसरा व जय बंसल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एम.एस.ए.सी. समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दूसरे स्थान पर रही हैं। एम.एस.ए.सी. मौलिक विज्ञान में शशांक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है, जबकि पीएच.डी. (सभी विषय) में अर्चना कुमावत पहले स्थान पर रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	18.8.2022	--	--

जानकारी

चौ.चसिं हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने आज घोषित किए सभी स्नातक परिणाम

स्नातकोत्तर एवं पीएचडी में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम आयोजित

आज समाज नेटवर्क

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छः वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद आज गुरुवार को शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एस.के. महता ने यह जानकारी देते हुए बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटेक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनर्स) कम्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छः वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्स्य विज्ञान व बायोटेक्नोलॉजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो भागों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थी।

इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छः वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे। परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार के अनुसार उम्मीदवार उपरोक्त सभी परीक्षाओं के परिणाम व इनसे संबंधित नवीनतम जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देख सकते हैं।

डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएससी (आनर्स) कम्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवजोत और द्वितीय और पूर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं जबकि बीएफएससी में गौरव सिंह ने पहला, प्रिया ने दूसरा और खुशबू ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशन, पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, काजल द्वितीय व नैन्सी तृतीय रही हैं।

एमटेक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व पुनीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं। इनके अतिरिक्त एमएफएससी में विशाल सोनी ने पहला, विशाल ने दूसरा व जय भगवान ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एमएससी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दूसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी मौलिक विज्ञान में रजनीक व अनुज ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है जबकि पीएचडी (सभी विषय) में अर्पणा कुमारी पहले स्थान पर रही हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	18.8.2022	--	--

एचएयू ने घोषित किए विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद आज गुरूवार को शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एस.के. महला ने बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनर्ज) कम्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीबिजनेस मैनेजमैंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्सय विज्ञान व बायोटैकनॉलोजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थी। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे।

पहली तीन स्थानों पर रहे ये विद्यार्थी

डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएससी (आनर्ज) कम्यूनिटी साइंस में काजल प्रथम, नवकीरत कौर द्वितीय और पूर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं जबकि बीएफएससी में नीरज सिंह ने पहला, प्रिया ने दूसरा और बुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशन, पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैन्सी तृतीय रही हैं। एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व गुनीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं। इनके अतिरिक्त एमएफएससी में विशाल सोनी ने पहला, विशाल ने दूसरा व जय बंसल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एमएसएससी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व बरखा दूसरे स्थान पर रही हैं। एमएसएससी मौलिक विज्ञान में शशांक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है जबकि पीएचडी (सभी विषय) में अर्चना कुमावत पहले स्थान पर रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिसार	19.8.2022	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने घोषित किए सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम

हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार और छह वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद आज शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनर्स) कम्यूनिटी साइंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्री बिजनेस मैनेजमेंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छह वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्सय विज्ञान व बायोटेक्नॉलोजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छ: वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	18.8.2022	--	--

चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने आज घोषित किए सभी दाखिले के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीएससी एग्रीकल्चर चार व छः वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित करने के बाद आज गुरूवार को शेष सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित की गई प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर दिए हैं। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एस.के. महला ने यह जानकारी देते हुए बताया कि बीएफएससी चार वर्षीय कोर्स, एमएससी एग्रीकल्चर, एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एमएससी गृह विज्ञान, बीएससी (आनर्ज) कम्यूनिटी साईंस चार वर्षीय पाठ्यक्रम, बीएससी एग्रीबिजनेस मैनेजमैंट, बीएससी एग्रीकल्चर चार व छः वर्षीय पाठ्यक्रमों सहित मौलिक विज्ञान एवं मानविकी, मत्स्य विज्ञान व बायोटैकनॉलोजी महाविद्यालयों के सभी एमएससी और पीएचडी के लिए दो चरणों में प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इनमें से विश्वविद्यालय ने बीते दिन बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय और बीएससी एग्रीकल्चर छः वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम घोषित किए थे। परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार के अनुसार उम्मीदवार उपरोक्त सभी परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट admissions.hau.ac.in & hau.ac.in पर देख सकते हैं। डॉ. पवन कुमार ने बताया कि बीएससी (आनर्ज) कम्यूनिटी साईंस में काजल प्रथम, नवकीरत कौर द्वितीय और पुर्णिमा तीसरे स्थान पर रही हैं जबकि बीएफएससी में नीरज सिंह ने पहला, दिशा ने दूसरा और बुलबुल ने तीसरा स्थान पाया है। इसी प्रकार एमएससी एग्रीकल्चर में गुलशन, पूजा और कनिका क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी गृह विज्ञान में आरती प्रथम, कामना द्वितीय व नैन्सी तृतीय रही हैं। एमटैक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में गौरव व गुनीत क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहे हैं। इनके अतिरिक्त एमएफएससी में विशाल सोनी ने पहला, विशाल ने दूसरा व जय बंसल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। एमएसएसी समाजशास्त्र में सुमेधा सिंह प्रथम व वरक्षा दूसरे स्थान पर रही हैं। एमएससी मौलिक विज्ञान में शशांक व अनुजा ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान पाया है जबकि पीएचडी (सभी विषय) में अर्चना कुमावत पहले स्थान पर रही है।